Digambar Jain 1915 08 Varsh Ank 01

Folder No.	543085
Granth Name	Digambar Jain 1915 08 Varsh Ank 01
Author	Mulchand Kisandas Kapadia
Publisher	Mulchand Kisandas Kapadia
Edition	1
Year	1915
Pages	170

दिगंबर जैन १९१५ वर्ष ०८ अंक ०१

फोल्डर नं.	५४३०८५
ग्रन्थ	दिगंबर जैन १९१५ वर्ष ०८ अंक ०१
लेखक	मूलचंद किसनदास कापडीया
प्रकाशक	मूलचंद किसनदास कापडीया
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९१५
पृष्ठ	१७०

मुख्य टाइटल
श्री महावीराष्टकम् संस्कृत ---------- १
वर्षारंभे नम्र याचना ---------- २
चालो ओ बंधु ---------- २
आशीश वचनो---------- २
An Awakening----------3
जननी जिनवाणी ---------- ४
दिगम्बर जैन नो विजय थजो ---------- ५
विनोद बाण गुजराती ---------- ९
उपदेशकना भ्रमणनो रिपोर्ट ---------- ११
जैन समाचार संग्रह ---------- १४
स्वीकार समालोचना ---------- १९
चित्र परिचय ---------- २२
Life or Death for Jains---------- 41
Live and Let Live ---------- 45
The Six Dravyas of the Jain Philosophy ---------- 47
Element of Religion in Education---------- 53
जैन स्त्री समाजने सुशिक्षित करवाना उपाय ---------- ६१
लोभई और फैय्याजी ---------- ६५
श्रीचंद्रगिरि पर्वत ---------- ७२
सदउपदेशरूपी संवाद ---------- ७७
गुणदृष्टिवडे जणाती बहिरात्मानी बलीहारी ---------- ८३
जैनोना सोळ संस्कार ---------- ८७
त्यागनुं नवुं स्वरूप ---------- ९२
ब्हेनोनी मीटींग ---------- ९६

विद्याभ्यास पछी शुं करवुं ---------- ९९
मित्रसम्वाद---------- १०३
वृद्धावस्थानो कागळ ---------- १११
जैनधर्म का महत्त्व ---------- ११३
थुइपंचअं ---------- ११८
काया के बारे में गझल ---------- ११८
दयामयी सुशिक्षा ---------- १२०
जैनजीवन अथवा दैवी जीवन ---------- १२१
हमारा कर्तव्य ---------- १२९
कर्मवीर---------- १३४
जैन बंधुओने संदेशो ---------- १३५
भारतीय युद्ध अथवा कौरव पांडवांचा काळनिर्णय ---------- १३७
जैनदर्शनस्यानुवाद ---------- १४०
जैनानां वर्तमानप्रगति ---------- १४४
जिणधम्मस्स उन्नइए उवाया ---------- १४५
ज्ञानतरंग ---------- १४६
जैन लोकांचे सांप्रतचे कर्तव्य ---------- १५१
जीवन चरित्रोनी महत्त्वता ---------- १५४
कीर्ति माटे करोडनुं पाणी ---------- १५७
भारतकी कुछ पूर्वदशा और चेतावनी ---------- १५७
अलौकिक जीवन ---------- १५८
अधेर जमाना ---------- १५८
पहलेके जैनों ---------- १५९
मनशिक्षा ---------- १६०